नवजात शिशु हेतु श्रवण परीक्षण

- यह श्रवण परीक्षण नवजात **शिशुओं** के लिए काफी आसान और दर्दरहित होता है जो **शिशु** के जन्म के तुरंत बाद या प्रथम छह महीने में करवाया जा सकता है ।
- यह जाँच किसी भी प्रकार की श्रवण संबंधी समस्या को पता लगाने में मदद करती है, यह समस्या **शिशु** के सर्वांगीण विकास पर असर डालती है ।
- यदि यह परीक्षण समय पर किया जाता है तो श्रवण संबंधी समस्याओं को समय पर **सुनिश्चित** करके बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए समय पर उपचार एवं देखभाल का प्रबंध किया जा सकता है ।

माण्टफोर्ट

माण्टफोर्ट केयर अर्ली **इंटरवेंशन** सेंटर

आपके बच्चे के **उज्जवल भविष्य** की उस कल्पना को साकार करती है जिनकी श्रवण **शक्ति** एक समस्या के रूप में उनकी सफलता के अवसर में बाधा उत्पन्न करती है ।

यह संस्था आपके बच्चे को ऐसे साधन उपलब्ध कराती है जो उन्हें श्रवण संबंधी विकलांगता से बाहर निकालने में सहायक होती है ।

हमारी संस्था छह **वर्ष** से कम आयु के बच्चों के लिए श्रवण संबंधी सेवाएँ उपलब्ध कराती हैं ।

दि स्टीफन स्कूल फॉर द डेफ एंड द अफासियक ट्रस्ट की छत्रछाया में दि माण्टफोर्ट केअर अर्ली **इंटरवेंशन** सेंटर अपनी इस परियोजना पर कार्यरत है ।

हमारी संस्था श्रवण संबंधी समस्या से ग्रसित छह वर्श से कम आयु के बच्चों की समयानुसार जाँच, उनका मूल्यांकन तथा सही उपचार पर अपना ध्यान केंद्रित करती है ।

आज ही अपने **शिशु** की श्रवण परीक्षण करवाएँ

Montfort Care

पता : दि स्टीफन स्कूल फॉर डेफ एण्ड अफासियक प्लॉट नं. 898, सिद्धि विनायक मंदिर के बाद, एस.के.बोले रोड, प्रभादेवी, दादर वेस्ट, मुंबई – 400 002

संपर्क : 7039375055

TIMING – 9.00am - 3.30pm

क्या आपका बच्चा आपको सुन सकता है

Montfort Care

क्या आपका बच्चा आपको सुन सकता है ?

क्या आपको पता है 1000 नवजात **शिशुओं** में से पाँच **शिशु** में जन्म से श्रवण विकलांगता होती है?!

बधिरता हमारे **देश** की दूसरी आम विकलांगता है जो जन्म से ही पाई जाती है । ऐसे कई बच्चों की सही समय पर पहचान नहीं हो पाता है जिसके परिणामस्वरूप उनके विकास पर गहरा असर पड़ता है। श्रवण संबंधी समस्या को अगर सही समय पर पहचान कर इसका उपचार नहीं किया गया तो यह बच्चे की बोली, **भाषा** तथा **शैक्षणिक** क्षमता को प्रभावित कर सकता है ।

हालाँकि आधुनिक चिकित्सा प्रणाली से नवजात **शिशुओं** के जन्म के तुरंत बाद ही **हम** इसकी जाँच और उपचार आरंभ कर सकते हैं ।

अपने बच्चे की किलकारियों पर **हमेशा** ध्यान दें । यदि इसकी अनुपस्थिति या देरी हो रही है तो तुरंत ही श्रवण जाँच करवाएँ ।

यह **आवश्यक** है कि आप अपने बच्चे की बोली तथा **भाषा** के विकास के बारे में सजग रहें । यदि इसके विकास में विलंब हो रहा है तो तुरंत श्रवण परीक्षण करवाएँ ।

ऐसे बच्चे जिनमें श्रवण की विकलांगता पाई जा सकती है।

बच्चे के पारिवारिक इतिहास में यदि कोई श्रवण संबंधी समस्या से ग्रस्त रहा हो ।

बच्चे की माता रूबेला या **उपदंश** जैसी **विषाणु** जनित संक्रामक रोग से ग्रसित हो ।

जन्म के समय यदि **शिशु** का वजन कम हो ।

जन्म के तुरंत बाद यदि **शिशु** इनक्यूबेटर में हो ।

जन्म के तुरंत बाद यदि **शिशु** को तेज बुखार हो ।

जन्म के **पश्चात्** यदि **शिशु** किसी **शारीरिक** आघात से गुजर रहा हो ।

श्रवण समस्या निवारण हेतु यदि दवाइयों का इस्तेमाल किया गया हो।

सामान्य देखभाल

DO'S

स्तनपान कराते समय षिषु का सिर थोड़ा उठाकर रखें ।

अगर समानांतर **दशा** में **शिशु** का सिर रहेगा तो उसके कान में संक्रमण **(इंफेक्शन)** फैलकर दर्द का कारण बन सकता है । **शिशु** के खेल सामाग्री पर नजर रखें । खासतौर पर मोती, बीज,बटन, मटर आदि । इन चीजों को अपने में डाल सकते हैं जिसके कान के परदे को नुकसान पहुँच सकता है तथा संक्रमण **(इंफेक्शन)** फैल सकता है।

शिशु को **शांतिपूर्ण** तथा कम ध्वनि वाले वातावरण में रखें । अचानक ऊँची आवाज करने वाली चीजें जैसे – पटाखें, ऊँची आवाज वाले खिलौने, बंदूक की आवाजें तथा लाऊडस्पीकर आदि कान के भीतरी अवयवों को नुकसान पहुँचा सकते हैं ।

शिशु का टीकाकरण निर्धारित समय पर करवाएँ । नवजात **शिशु** का संपूर्ण परीक्षण करवाएँ जिसमें **दृष्टि,** श्रवण तथा पाचन क्रिया भी **शामिल** हो । अपने आसपास से आनेवाली ध्वनियों के प्रति **शिशु** तथा उसकी आँखों की प्रतिक्रिया के प्रति जागरूक रहें ।

नवजात **शिशु** से संबंधित समस्याओं के लिए **हमेशा** चिकित्सक की सलाह लें । जैसे– पीला पड़ना, अपाचन होना या साँस फूलना आदि ।

DONT'S

किसी भी नुकीली वस्तु जैसे – हेयर पिन, पेन्सिल, माचिस की तीली अथवा कान खोदनी को बच्चे के कान में न डालें – यह कान के परदे को नुकसान पहुँचा सकता है ।

किसी भी **अप्रशिक्षित** व्यक्ति को अपने बच्चे के कान का इलाज न करने दें । किसी भी नीम हकीम से इलाज, तेल या तरल पदार्थ डालने से कान को नुकसान पहुँच सकता है ।

कान के ऊपर थप्पड़ न मारे – इससे कान के आंतरिक भाग को नुकसान पहुँच सकता है तथा कान का परदा भी फट सकता है ।